“मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ये चुप रहेंगे, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।” — लूका 19:40

यीशु जब यरूशलेम की ओर बढ़ रहे थे, तो उनके चेलों ने ज़ोर से आनंदपूर्वक परमेश्वर की महिमा का गुणगान करना शुरू किया, क्योंकि उन्होंने वे सब सामर्थ्य के काम देखे थे जो यीशु ने किए थे। उन्होंने चिल्लाकर कहा:

“धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है! स्वर्ग में
शान्ति हो और आकाश में महिमा हो!” — लूका 19:38

लेकिन भीड़ में कुछ फरीसी थे जिन्होंने यीशु से कहा, “गुरु, अपने चेलों को डाँट।”

पर यीशु ने उत्तर दिया:

“मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ये चुप रहेंगे, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।” — लूका 19:40

यीशु ने यह शब्द केवल एक दृष्टांत के रूप में नहीं कहे, बल्कि उन्होंने सृष्टि की उस अद्भुत गवाही को उजागर किया जो स्वयं परमेश्वर के कार्यों को प्रकट करती है।
बाइबल कहती है —

“आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है; और आकाशमण्डल
उसके हाथों के कार्य को प्रकट करता है।” — भजन संहिता 19:1

यदि मनुष्य अपनी कृतज्ञता, आराधना और गवाही में मौन हो जाते हैं, तो सृष्टि स्वयं परमेश्वर की महिमा को प्रकट करेगी। क्योंकि सारी सृष्टि का उद्देश्य ही यह है कि वह अपने स्रष्टा की ओर संकेत करे।

जब हम यीशु की स्तुति करते हैं, तो हम उसी उद्देश्य को पूरा करते हैं जिसके लिए हमें बनाया गया था।
भजन संहिता में लिखा है —

“सब कुछ जिस में श्वास है, वह यहोवा की स्तुति करे।” — भजन संहिता 150:6

यदि मनुष्य स्तुति करना छोड़ दें, तो यह सृष्टि के संतुलन के विरुद्ध होगा।
इसलिए यीशु ने कहा — “पत्थर चिल्लाएँगे” — अर्थात परमेश्वर की महिमा को कोई भी मौन नहीं कर सकता।

जब किसी व्यक्ति ने यीशु के प्रेम और उद्धार का अनुभव किया है, तो वह उसे छिपा नहीं सकता।
जैसे प्रेरितों ने कहा था —

“हम तो उस बात की गवाही देना नहीं छोड़ सकते जो हमने देखी और सुनी है।” — प्रेरितों के काम 4:20

सच्ची कृतज्ञता भीतर से उमड़ती है और मुँह से निकलती है।
वह स्तुति, धन्यवाद और गवाही बन जाती है।

यदि आज कलीसिया या विश्वासी परमेश्वर की महिमा करना बंद कर दें, तो संसार की अन्य चीज़ें — प्रकृति, परिस्थितियाँ, यहाँ तक कि पत्थर भी — परमेश्वर की महानता को घोषित करेंगे।
क्योंकि परमेश्वर की सच्चाई को कोई दबा नहीं सकता।

“सारी सृष्टि कराहती और पीड़ा में तड़पती है, परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रतीक्षा में।” — रोमियों
8:19,22

यह संसार स्वयं परमेश्वर की आराधना में सहभागी होना चाहता है।

आज यीशु हमसे भी वही प्रश्न पूछते हैं — क्या तुम मौन रहोगे, या मेरी महिमा का प्रचार करोगे?
क्योंकि यदि हम चुप रहेंगे, तो पत्थर बोल उठेंगे।
परन्तु धन्य हैं वे लोग जो अपने मुँह से और अपने जीवन से प्रभु की महिमा प्रकट करते हैं।

“तू अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम कर, और उसके नाम की महिमा
का प्रचार कर।” — व्यवस्थाविवरण 6:5; यशायाह 12:4

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp